* उपसंहार *

सातवें दशक के सर्वाधिक खूब चर्चित ऐसे कहानी आन्दोलन 'सचेतन कहानी' के सुप्रसिद्ध महीप सिंह रहे है तथा उनका प्रमुख स्थान समकालीन कहानीकारों में रहा है। महीप सिंह स्वातंत्र्योतर साहित्यकार की पहचान रखते है। हिन्दी साहित्य में निर्मित कहानी को नयी दृष्टि प्रदान करने की कोशिश उनके माध्यम से की गई है। उन्होंने तत्कालीन नई कहानी और अकहानी कहानी धारा में निहित व्यक्तिपरता और गुटबंदी के प्रति असंतोष प्रकट करने हेतु सचेतन कहानी आंदोलन के रुप में प्रस्तुत किया है।

सचेतन कहानी आंदोलन की शुरुआत सातवें दशक पूर्वाद्ध में हुई। यों तो सन् 1950-60 के आसपास ही सचेतन कहानी का स्वर सुनाई पड़ने लगा था। लेकिन विधिवत् शुरुआत इलाहाबाद से प्रकाशित होनेवाली आधार पत्रिका के नवम्बर 1964 के सचेतन कहानी विशेषांक से मानी जाती है। इस विशेषांक का संपादन महीप सिंह ने किया था। इस विशेषांक में दस लेखकों ने सचेतन कहानी के मर्म को स्पष्ट किया तथा बीस कहानीकार की कहानियों को प्रकाशित किया गया। जिनकी कहानियों में सचेतन दृष्टि नजर आती है। इस आंदोलन शुरुआत के समय के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व साहित्यिक परिवेश का अध्ययन करने से यह स्पष्ट हो गया है, कि उस समय चीनी युद्ध एवं अकाल से आर्थिक व्यवस्था चरमरा उठी थी।

महीप सिंह ने सचेतन कहानी को विचार प्रदान कहानी आन्दोलन माना है। सचेतन कहानी में शिल्प की रचनात्मक स्तर पर तलाश की गई है। उन्होंने नई कहानी के शिल्प प्रेम की प्रवृत्ति का विरोध करके कहानी में कथ्य के सहज सम्प्रेषण पर विशेष बल दिया है। सचेतन

कहानी में शिल्प की अपेक्षा कथ्य को प्रधानता दी गई है जो इस कहानी आन्दोलन की एक विशेष उपलब्धि है तथा स्पृहा का विषय है। सचेतन कहानी का सहजता का दर्शन भाषा पर भी लागू होता है। सचेतन कहानी की उपलब्धि का सबसे बड़ा कारण रचना प्रक्रिया के प्रति कहानीकार का बदला हुआ दृष्टिकोण ही है। परिवेश के प्रति सचेतन कहानीकार की जागरुकता, तटस्थता तथा प्रामाणिकता बहुत बड़ी उपलब्धि है। समस्त हिन्दी साहित्य पर 'सचेतन दृष्टि' का प्रभाव देखा जा सकता है।

'नई कहानी' की अनेक कहानियों में सचेतन दृष्टि दिखाई पड़ती है, लेकिन 'नई कहानी' में इस दृष्टि की विशेषताओं पर विशेष ध्यान नही दिया गया। लेकिन सचेतन कहानीकारों ने 'सचेतन दृष्टि' को अपने साहित्य का मूल दर्शन बनाकर समाज एवं साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की। सचेतन कहानी आन्दोलन के बाद हिन्दी कहानी में क्रमशः सहज कहानी, समांतर कहानी, सक्रिय कहानी व जनवादी कहानी आन्दोलन उभर कर आए। कोई भी आन्दोलन साहित्य में अपना उचित स्थान खोजने के लिए अपने पूर्ववर्ती या समानान्तर आन्दोलनों पर कुछ आक्षेप लगाकर ही आगे बढ़ता है। हिन्दी कहानी साहित्य का अवलोकन करने के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि इसकी परवर्ती कहानी पर 'सचेतन दृष्टि' के प्रभाव को स्वीकारोक्ति पूर्णत: नहीं तो आंशिक रुप से मिली है। इस तरह सचेतन कहानी की 'सचेतन दृष्टि' का प्रभाव अधतन हिन्दी कहानी साहित्य में देखा जा सकता है।

मानव जीवन के सह अस्तित्व के लिए मानवीय संबंधों की भूमिका अनिवार्य है। मनुष्य सामाजिक रिश्तों को कायम कर अपनी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, पारिवारिक आदि आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है। मानवीय संबंधों का दायरा वैयक्तिकता से सामुहिकता की ओर विस्तारित होता है। लेकिन युग परिवर्तन से परंपरागत सामाजिक संबंधों

में पतनोन्मुख परिवर्तन पाया जाता है। मानवीय संबंधों में प्रेम, सदभाव, करुणा, संवेदना, सम्मान, स्नेह, मैत्री, आदर आदि तिरस्करणीय भाव कायम हो रहे है। जो एक चिन्ता की बात है, जिसे महीप सिंह ने अपनी कहानियों में कथ्य के माध्यम से बखूबी उजागर किया है। इसीलिए कई आलोचक महीप सिंह की कहानियों को मानवीय संबंधों की व्याखया करने वाली कहानियों के रुप में स्वीकार करते है। महीप सिंह की कहानियों में संबंधों के अंतर्गत-स्त्री का पारिवारिक संबंध, स्त्री-पुरुष के संबंध, प्रेम के अन्य संबंध नारी क आदि विविध आयाम उभरकर सामने आते है।

महीप सिंह सन् 1955 से 1963 तक मुबंई में रहे, बाद में वह दिल्ली में रहकर अपना जीवन-यापन किया है। जिसके प्रभाववश होकर उन्होंने महानगरों के परिवेश में ही कहानियों के कथ्य के रुप में निरूपित हुए है। यहाँ यह भी विशेष उल्लेखनीय है कि कहानीकार अपने आस-पास धटित धटनाओं या अनुभव को कहानी निर्मित करने का वैशिष्ट्य रखते है। उनकी कहानियों में ज्यादातर सामाजिक संबंधों की विषमता, महानगरीय जीवन संबंधित जटिलताएँ, राजनीतिक विसंगतता, सांप्रदायिक भेदभाव आदि पहलू उभरे है। उनकी प्रथम कहानी 'मैडम' सन् 1963 में लिखी गई थी, जो सितंबर 1967 में सरिता में प्रकाशित हुई थी। उनकी दूसरी कहानी 'उलझन' है, जो व्यापक रुप से प्रसिद्ध रही। कहानी को 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' द्वारा आयोजित प्रेमचन्द कहानी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार के साथ हिन्दी साहित्य जगत में आगमन किया था, तब से लेकर उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। तब से लेकर आज तक उन्होंने हिन्दी कहानी साहित्य को विशिष्ट कृतियाँ प्रदान की हैं तथा सक्रिय लेखन की वजह से सदा ही हिन्दी साहित्य में चर्चा का विषय बने रहे है।

महीप सिंह के हिन्दी साहित्य में आगमन के समय हिन्दी साहित्य (नयी कहानी आंदोलन) खेमेबाजी के दौर से गुजर रहा था। उस समय युवा साहित्यकार या सामान्य साहित्यकार का हिन्दी साहित्य जगत में अपनी पहचान बनाना बहोत ही मुश्किल था। दूसरी बात यह भी सोचनीय है कि नयी कहानी आंदोलन की प्रवृत्तियाँ बड़े जोर-शोर से प्रवृत थी। महीप सिंह ने 'नयी कहानी आंदोलन' की संकुचितता से कहानी को मुक्ति दिलाने हेतु सचेतन सोच के साथ 'सचेतन कहानी आंदोलन' की शुरुआत की। उन्होंने 'आधार' के 'संचेतन कहानी विशेषांक' (1965) के प्रकाशन के साथ हिन्दी कहानी साहित्य में अपनी विशेष पहचान कायम की है। महीप सिंह ने अपने साहित्य के माध्यम से मूल्य-संकट को अभिव्यक्त करने का नूतन अभिगम अपनाया है। वे अपने व्यक्तित्व एवं सोच के अनुकूल ही सचेतन दर्शन को एक जीवन दृष्टि मानते है।

कहानी लेखन में महीप सिंह ज्यादातर सक्रिय रहे है। उन्होंने लगभग अपनी साहित्यिक यात्रा समय के दौरान केवल तीन ही उपन्यास लिखे हैं - 'यह भी नहीं' (1976), 'अभी शेष है' (2004), और 'बीच की धूप' (2010)। महीप सिंह की कहानियाँ उसके अनुभव जगत के पात्र, धटना और संदर्भो से निर्मित होने की वजह से मुख्यत: महानगरीय मध्यमवर्गीय जीवन के विविध संबंधों को चित्रित करती है। उनका शुरुआती कहानी सफर समस्या मूलक मानवीय संबंधों के दायरे में सरल और परंपरागत स्वरूप में प्रस्तुत होता है। इस दौर में 'उलझन','शास्त्रीजी', 'सुबह के फूल' आदि कहानियाँ नारी को पारिवारिक रिश्तों को सरल दृष्टि से चित्रित करती है। लेकिन बाद में जैसे-जैसे उनका लेखन कार्य आगे बढ़ा ठीक वैसे- वैसे उनकी कहानियों में सामाजिक संबंधों की जटिलताएँ रहस्यात्मक ढंग से प्रस्तुत होती है। 'उजाले के उल्लू','काला बाप गोरा बाप','ब्लाटिंग पेपर','कील', 'गंध','सीधी

रेखाओं का वृत','कुछ और कितना','कितने संबंध' आदि कहानियों में नारी के सामाजिक संबंधों में जटिलता को और विस्तार देती है। महीप सिंह ने स्त्री -पुरुष के संबंध और प्रेम के अन्य संबंध आधारित संदर्भ के द्वारा नारी पात्रों को समाज में अधिक प्रतिष्ठा दिलाने का प्रयास किया है। 'एक लड़की शोभा','ब्लाटिंग पेपर','सीधी रेखाओं का वृत','कुछ और कितना','कितने संबंध' आदि कहानियों में नारी सामाजिक विसंगतियों के बीच जूझकर अपना अस्तित्व कायम करने के लिए प्रयत्नशील दिखाई देती है।

महीप सिंह की कहानियों में अभिव्यक्त सामाजिक संबंधों के विविध आयाम पर गौर किया जाए तो नारी के पारिवारिक संबंधों की जटिलता को बखूबी ढंग से अभिव्यक्त किया है। उनकी कहानियों के नारी पात्र अकेलापन, संत्रास, अजनबीपन, कुंठा, ऊब को झेलते हुए भी जीवन के प्रति आस्थावान दिखाई देते है। वैसे तो महीप सिंह ने महानगरीय यंत्रणा के सभी पहलुओं को अपनी कहानियों में उजागर किया है। उन्होंने ने महानगरीय संदर्भ को अत्यंत ही विस्तृत, विविधता और संजीदगी के साथ उभारा है। महानगर की कोई भी समस्याएँ या विसंगतियों महीप सिंह की कहानियों से छूट नहीं पाई। उनकी 'सन्नाटा','गंध','शोर','एक लड़की शोभा','ब्लाटिंग पेपर','एक स्त्री एक पुरुष','पारदर्शी दीवार','काला बाप गोरा बाप','उजाले के उल्लू','लिफ्ट','झूठ' आदि कहानियों में महानगरीय समस्याओं का चित्रण हुआ है। जिसमें महानगरीय चकाचौंध, ग्राम्य-महानगरीय संस्कारों की टकराहट, आर्थिक विपन्नता, मूल्य विधटन की प्रक्रिया, अकेलेपन से कुंठित चरित्र, मृत्युबोध से उत्पन्न तनाव आदि प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से व्यक्त हुए है।

महीप सिंह की कहानियों के पात्र में अधिकांश नारी जीवन को जीने के साथ-साथ जानने में भी रत दिखाई देती है। वह आज के जीवन को

जीने की तमाम समस्याओं से घिरे हुए हैं, नसों को तडका देने वाले तनाव में भी गुज़र रही है। निराशा और हताशा उन्हें जड़ बना देने की हद तक ले जाती है, लेकिन वह इससे बाहर निकलने का प्रयास करना नहीं छोडती है। उनकी कहानियों में अधिकांश भारतीय नारी का परम्परागत गृहिणी का चित्र प्रस्तुत किया है। इनकी कहानियों के पुरुष मात्र बेजिम्मेदार और दुर्बलता से ग्रस्त है, जबकि महिला पात्र विपरित परिस्थितियों के बीच अलग रास्ता चुनती हुई सबल और जिम्मेदार मालूम होती है। साथ ही साथ शिक्षा के प्रसार से नारी ने अपनी अस्मिता को पहचाना है। वह अब पहले जैसी नहीं रह सकती। महीप सिंह की कहानियों में नारी एवं स्व के प्रति जागृत होती दिखाई देती है।

महीप सिंह को महानगरीय परिवेश के यौन संबंधों के कहानीकार से जाना जाता है। लेकिन उन्होंने यौन संबंधों के अलावा भी पारिवारिक तथा सामाजिक संबंधों को भी अपनी कहानियों का विषय बनाया है। उनकी अपने परिवेश के प्रति सजगता के कारण शायद ही ऐसा कोई संबंध हो, जिसको उन्होंने अपनी कहानियों में जगह न दी हो। उन्होंने अपने युग के व्यक्ति की मन:स्थितियों की अनुभूतिमय विवेचना की है तथा मानवीय चितवृतियों के साथ मानवता के शाश्वत पक्षों का भी चित्रण किया है। स्वातंत्र्योतर परिवर्तित परिवेश में पारिवारिक विधटन के कारण संबंधों में तनाव और बिखराव आने लगा। उन्होंने कई कहानियों में पारिवारिक संबंधों के विभिन्न शेड्स को उभारने का प्रयास किया है। 'सन्नाटा' कहानी में महानगरीय सभ्यता ने मां-बेटी के बीच अलगाव पैदा कर दिया है। 'कील' और 'फोक्स' कहानी में महानगरीय जीवन ने मनुष्य को स्वार्थी तथा अमानवीय बना दिया है। 'कल' तथा 'कितने संबंध' कहानियों में मां-बाप के प्रति उपेक्षित व्यवहार उभरता है। 'एक लड़की शोभा' कहानी में

संबंधों की उष्मा बढ़ गई है। 'माँ' कहानी में कामकाजी सहयोगियों के बीच पदोन्नति की होड़ में संबंधों में कटुता बढ़ी है।

महीप सिंह ने स्त्री-पुरुष संबंधों के हर स्पन्दन को महसूस किया है। उनकी अधिकांश कहानियों में स्त्री-पुरुष संबंधों का सफल चित्रण हुआ है। स्वातंत्र्योतर काल में स्त्री को कुछ विशेषाधिकार मिलने से उसकी स्थिति में व्यापक परिवर्तन आया जिससे स्त्री-पुरुष संबंधों का समीकरण भी बदल गया। महीप सिंह ने अपनी कुछ कहानियों में स्त्री की बदलती मानसिकता व पुरुष की परम्परागत मानसिकता से उसकी टकराहट व उससे उत्पन्न हुए तनाव, खीझ, ऊब को गहराई तक परख कर चित्रित किया है। उन्होंने स्त्री-पुरुष संबंधों का वर्णन 'नयी कहानी' तथा 'अकहानी' के कहानीकारों की तरह चटखारे लेकर नहीं किया, बल्कि यौन अनुभवों को पूरी निस्संगता से उन्हें कुत्सित बनाए बिना वर्णित किया है। उनकी कुछ कहानियों में पति-पत्नी संबंधों में कहीं मिठास है तो कहीं कड़वाहट भी दिखाई देती है। 'माँ' कहानी में पत्नी पति से ऊँची पदवी पर हैं, इस कारण इनके संबंधों में मधुरता नहीं आ पाती। 'गध' तथा 'लोग' कहानियों की पत्नियाँ भी नौकरी करती है। अत: उनमें स्व के प्रति सजगता के कारण पति की भावनाओं को चोट पहुँचती है। 'पति' कहानी में भी पत्नी के स्वतन्त्र अस्तित्व की भावना के कारण पति-पत्नी के संबंधों में कभी मिठास नहीं आ पाती। 'धूप की उंगलियों के निशान','काला बाप गोरा बाप' तथा 'घिराव' कहानियों की स्त्रियाँ तलाकशुदा हैं फिर भी उनका अभी भी किंचित मात्र रिश्ता पूर्वपति से बचा रह जाता है। 'उलझन' कहानियों में पति-पत्नी के संबंधों की मधुरता कायम है।

स्त्री-पुरुष के विवाहेत्तर संबंधों को भी महीप सिंह ने कहानियों में अभिव्यक्त किया है। ये संबंध विवाहत स्त्री-पुरुष के भी है तथा अविवाहित स्त्री-पुरुष के भी है। परन्तु पुरुषों में विवाहेत्तर संबंध रखने

वाले अधिकतर पात्र विवाहित है। 'उजाले के उल्लू','बाद की बात' आदि कहानियों में स्त्री-पुरुष के विवाहेत्तर संबंधों का मन्तव्य समय बिताने का है। 'गध' कहानी में स्त्री की सोहब्बत से एकरस जीवन में कुछ सरसता लाने वाले संबंध है। 'शोर','सीधी रेखाओं का वृत' यह कहानियों में स्त्रियाँ पुरुष का प्रेम पाने के लिए संबंध बनाती है। 'एकस्ट्रा','टकराव' आदि कहानियों में व्यावसायिक दृष्टि से इस्तेमाल होने वाले विवाहेत्तर संबंध है। 'गध','ब्लाटिंग पेपर' तथा 'बाद की बात' कहानियों की स्त्रियाँ अपने जीवन साथी की तलाश में धोखा खाती हैं, परन्तु वे परिस्थितियों से जूझ कर जीवन में आगे बढ़ती हैं, टूटती नही। महीप सिंह कहानियों की कुछ नारी पुरुष को जीवन का पूरक तो मानती है, लेकिन अपनी अस्मिता की कीमत पर नहीं। गैर जिम्मेदार पुरुषों के हाथ का खिलौना बनकर जीना उन्हें स्वीकार नही है।

भारतीय नारी का परम्परागत चित्र महीप सिंह की कहानियों की गृहिणी नारी पात्र प्रस्तुत करती है तथा अनेक गृहणियों पर अभी भी महानगर के आत्मकेंद्रित जीवन का इतना रंग नहीं चढ़ा है तथा उनकी कहानियों में पति के रुप में नायक नितान्त सद्गृहस्थ और कोमल सहृदय दिखाई देते है। किसी अपवादस्वरूप ही किसी एक-आध कहानी को छोड़कर वह पत्नी के साथ सदा प्रेम और सहानुभूति से पेश आता है। महीप सिंह की कहानियों में स्त्री-विवाहित, अविवाहित, तलाकशुदा, रखैल, वेश्या सभी रुपों में पात्र बनी है। इनकी विशेषता यह रही है कि ये सब आत्मसजग तथा आत्मविश्ववासी हैं तथा कुछ हद तक आत्मनिर्भर है।

समाज की सम्पूर्ण विसंगतियों एवं विषमताओं का यथार्थपूर्ण चित्रण कर एक नई दृष्टि प्रदान करके जीवन में आई इन विसंगतियों में सहज होकर जीने का दर्शन महीप सिंह ने अपनी कहानियों के माध्यम से दर्शाया है। उनका मानना है कि जीवन में केवल कुंठा, संत्रास, अजनबीपन

ही नही है, बल्कि जीवन में आस्था भी एक चीज है, जिसके सहारे वह जीवन को जीने और भोगने की नियति को स्वीकार करता है। उन्होंने अनेक कहानियों में एक सशक्त दृष्टि दिखाई देती है जो मनुष्य को विषम परिस्थितियों से संघर्ष करने, उसमें सहज होकर उसे सचेतन दृष्टि प्रदान कर सक्रिय जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है।

'कितने संबंध' कहानी की मिसेज मेनका खन्ना तथा 'कटाव' कहानी की शीला बेमेल पति को पाकर भी सहज होकर जीवन जीती है। 'कील' कहानी की मोना एक द्वन्द्व के बीच संघर्ष करके सहज होती है। 'घिराव' कहानी की सुम्मी तलाक के बाद पूर्व पति का घिराव महसूस होने पर भी सहज होकर जीने की कोशिश करती है। 'घिरे हुए क्षण' कहानी का दिलीप पत्नी के विवाहेत्तर संबंधों को जानते हुए भी सहज ही बना रहता है। 'ब्लाटिंग पेपर' कहानी की प्रीति 'गंध' कहानी की शांता तथा 'सीधी रेखाओं का वृत' कहानी की सदी प्रेम संबंधों के टूटने पर टूटती नहीं है। महीप सिंह की इन सब कहानियों के ये पात्र जीवन की विपरित परिस्थितियों में जीने की कोई न कोई राह निकाल ही लेते हैं, उनमें धुट-धुट कर टूटते नही है।

सचेतन दृष्टि महीप सिंह की ज्यादातर कहानियों में दिखाई देती है। उनकी कहानियों के विषय ज्यादातर नारी पात्रों महानगरीय परिवेश के मध्यवर्ग से संबंध रखती है। इस वर्ग परिवेश की नारी के जीवन को घुटन, कुंठा, व्यथा, विषाद, संत्रास, अजनबीपन एवं अनेक सामाजिक विसंगतियों से उबरने के लिए सचेतन दृष्टि का सहारा लेकर कहानियाँ रची है। उनकी कहानियों की नारी पात्रों विषम परिस्थितियों में समसृयाओं से विचलित नहीं होती बल्कि उनसे जूझकर कुछ पाने की कामना रखती है। यह नारी पात्र जीवन विमुख भी नहीं होते, न ही आत्महत्या करती है, बल्कि एक सार्थक जीवन जीने की ओर उनमुख होती है। इस प्रकार

संबंधों में तनाव बढ़ने की बजाए तनाव में सहज होकर जीवन जीने के लिए उचित राह ढूँढ़ना ही उनकी कहानियों की विशेषता रही है।

महीप सिंह की कहानियों में नारी की जटिलता को व्यक्त करने में कथाकार का मन अपेक्षाकृत अधिक रमा है और उन्होंने इस संदर्भ में कोई बहुत अच्छी कहानियों लिखी है। नारी के यौन संबंध के बारे में महानगर में ज्यादा बताया गया है। उन्होंने लगभग सभी तरह के नारी की भूमिकाएँ की जटिलता और उनके विविध आयाम भी अपनी कहानियों में बताया है। नारी की वास्तविकता उन्होंने गहराई से दर्शाया है। कोई भी सम्बन्ध में नारी का पात्र नितान्त नकारात्मक पात्र नहीं लगता है। सामान्यतः शिक्षित और जागरुक नारी पात्र महानगर और मध्यमवर्ग के है। ये अपने अहंम के प्रति भी चैतन्य है और सम्बन्धों में भूमिकाएँ निभाने के प्रति भी। इसी कारण नारी नैतिक संकट में घिरे दिखाई देती है।

महीप सिंह की कहानियों के पात्र में अधिकांश नारी जीवन को जीने के साथ-साथ जानने में भी रत दिखाई देती है। वह आज के जीवन की तमाम समस्याओं से घिरे हुए हैं, नसों को तड़का देने वाले तनाव में भी गुज़र रही है। निराशा और हताशा उन्हें जड़ बना देने की हद तक ले जाती है, लेकिन वह इससे बाहर निकलने का प्रयास करना नहीं छोडती है। नारी जीवन से भागने की कोशिश नहीं करती बल्कि जीवन की ओर भागती है। वे तीव्र गति से जीवन पद्धति में आते परिवर्तन के कारण उत्पन्न होने वाली असहज स्थितियों में सहज होने का प्रयत्न करती दिखाई देती है। नारी शिक्षा के प्रसार से अपनी अस्मिता को पहचाना है, अब वह पहले जैसी नहीं रह सकती है। उनकी कहानियों में नारी एवं स्व के प्रति जागृत होती दिखाई देती है।

महीप सिंह दिल्ली और मुबंई जैसे महानगरों में अपना जीवन गुजारा है। इसके प्रभाववश उनकी रचनाओं में महानगर दिखना स्वाभाविक है। महानगरों की चकाचौंध, औधोगीकरण एवं विकास ने सामान्य व्यक्ति को भी प्रभावित किया है। महानगर की समस्याओं ने सामान्य व्यक्ति को संवेदनहीन बना दिया है। संवेदनहीनता के साथ-साथ नारी के संबंधों में मूल्यहास की स्थिति को लेकर भी चिन्तित मालूम होते है। उनका कहना है कि नारी महानगरों में रहकर स्वार्थी, आत्मकेंद्रित, खुदगर्ज बनती जा रही है। जिससे नारी के बाकी सारे संबंधों पर प्रभावित होता है। पाश्चात्य संस्कृति, भौतिकवादिता के प्रभाव से नारी की महानगरीय जीवन में कई विडंबनाओं, समस्याओं और विषमताओं से ग्रस्त मालूम होती है। महानगर की भीड़ के बीच नारी अपने अस्तित्व को लेकर निरर्थकता का अनुभव करती है। महानगरीय व्यस्तता में नारी एकाधिक परिस्थितियों के बीच संतुलन स्थापित न कर पाने की वजह से मानसिक रूप से रुग्णता अनुभव करती है। 'सन्नाटा' में भाग दौड़ और व्यस्तता की जिन्दगी में माँ-बेटी के रिश्तों में परस्पर उदासीनता और निरपेक्षता मालूम होती है। आर्थिक संकट के कारण कभी विरोध, विद्वोह, हताशा, विवशता जैसी कसक भी महीप सिंह ने महानगरीय परिवेश की कहानियों में उल्लेख किया है। गरीबी, महँगाई, बेरोज़गारी, कालाबजारी आदि के बढ़ते प्रभाव से नारी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाती है। 'वेतन के पैसे' मध्यमवर्गीय आर्थिक संकट का सबसे बुरा प्रभाव गृहिणी को झेलना पड़ता है।

महीप सिंह की कहानियों की शक्ति उनके कथ्य में है। वे न तो कभी भाषा के नये और लुभावने मुहावरे की खोज में रहे न ही शिल्प चातुरी के चक्कर में पडे। वे कहानियों लिखते कम जीते ज्यादा है। इनकी कहानियों की भाषा में कहीं बनावट या अटपटापन तथा अश्लीलता दिखाई

नही देती, वे पाठकों की ही भाषा में लिखते है। उनके चरित्रों के चयन का आधार काफी व्यापक है। वे चरित्र के भीतर गहरे पैठते है तथा उन्होंने कभी उनके साथ दखलंदाजी नहीं की है। अत: कहा जा सकता है कि इनकी कहानियों में कथ्यों की विविधता है, भाषा एवं सांकेतिक है।

महीप सिंह की कहानियों का शिल्प पक्ष परिवर्तित समय के अनुसार नूतन प्रयोगों का साथ नया स्वरूप धारण करता है। उन्होंने जीवन की स्थूल, सूक्ष्म और सूक्ष्मतर घटनाओं को अपनी कहानियों में कथ्य के रुप में मूर्त स्वरूप प्रदान किया है। कहानीकार सामान्य से सामान्य घटना पर कहानी का कथ्य बुनने में सिद्धहस्त मालूम होते है। महानगरीय परिवेश और पात्रगत प्रभाव के चलते अंग्रेजी भाषा का प्रयोग देखने को मिलता है। कहावतें, सुक्तियाँ, मुहावरें आदि के उचित प्रयोग से भाषाकीय प्रभाव बढ़ाया गया है। कहानियों के स्वरूप निर्धारण हेतु प्रयुक्त विभिन्न शैलियाँ-वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, डायरी, पत्रात्मक आदि शैलियों का प्रयोग भी उनकी कहानियों की उपलब्धि मानी जाती है। उन्होंने भाषा में सूक्ष्म से सूक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति के लिए बिम्बों एवं प्रतीको का प्रयोग किया है, जटिल जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति के लिए भावों में ऐसे अपमानों का भी प्रयोग किया है जो हमारे दैनिक जीवन में दिखाई देते है। सामाजिक जीवन बोध को रुपादित करने के लिए उन्होंने अपनी कहानियों में पात्रानुरुप संवाद, सहज, सांकेतिक, प्रतिकात्मक एवं पूर्वदीप्ति शैलियों का प्रयोग किया है। उन्होंने लेखन के दौरान अपने अनुभव को हर मोड़ पर दिखाया है, वो अपनी पूरी क्षमता के साथ विधमान है।

महीप सिंह के कथा शिल्प की एक प्रमुख विशेषता है उनकी कलात्मक निस्संगता वे अपने समूचे रचना परिवेश में उस दूरी का निर्वाह करने में कहानी लेखक की अप्रत्यक्ष डायरी बनकर रह जाती है। उन्होंने

कहानियों में कथानक में कहानी के कथ्य में सत्य को रचनात्मक रुप में प्रस्तुत किया है। जिसमें मानव मूल्यों की सही पहचान और उन्हें उजागर करने का अपूर्व समर्थ है। मनुष्य की वर्तमान जीवन की विकृतियों, विडंबनाओं, विषमताओं के बीच एवं सक्रियता का बोध इनकी सबसे बड़ी विशेषता है। उन्होंने समाज, व्यक्ति, परिवार में आए तनाव को अपनी कहानी का कथ्य बनाकर प्रस्तुत किया है।

हर एक कहानीकार का कहानी लिखने के पीछे कोई- न -कोई उदेश्य तो होता है। महीप सिंह ने सिर्फ मनोरंजन मात्र के लिए कहानियों नहीं लिखी है, उन्होंने अपनी कहानियों में नारी समस्याओं को अधिक मात्रा में उठाया है। और नारी को उन समस्याओं के प्रति आकृष्ट करना उनका उदेश्य रहा है। इसके साथ उन्होंने मानवी के आपसी संबंधों को बहोत अच्छी तरह दिखाया है। संबंधों के द्वारा लोगों का ध्यान खींचना भी उनका उदेश्य रहा और अपने उदेश्य तक अपनी कहानियों को पहुँचाने में महीप सिंह जी सफल रहे है।

अनन्त: कहा जा सकता है कि महीप सिंह ने हिन्दी कथा साहित्य में अपनी बहोत गहरी पहचान बनाई है। उन्होंने हिन्दी कथा जगत् को एक विचार, सिद्धांत और जीवनपरक अर्थवता दी है। वे बदलते परिवर्तित परिवेश के अनुसार बदलती सामाजिक मान्यता एवं मूल्य परिवर्तन को निखारकर साहित्य की दुनिया में अपनी अलग ही छाप बनाई है। इनके कथा साहित्य के आलोक में इनका व्यक्तित्व अपनी सीमाओं और शक्तियों के कारण समकालीन कहानीकारों की भीड़ में से सबसे अलग दिखाई देते है।